दिनांक 17.02.2020

एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अन्तर्गत असमिया नृत्य प्रतियोगिता आयोजित

नृत्य पेश करती बालिकाएं

बालोतरा(निसं)। डी आर जे राजकीय कन्या महाविद्यालय में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत'' योजना के अन्तर्गत असमिया नृत्य प्रतियोगिता व असमिया जानकारी से संबंधित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

प्रभारी डॉ. राजकुमारी ने बताया कि असमिया नृत्य बागान में चाय, देवी पूजा व गौरी पूजा पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम प्रिंयका कुमारी, द्वितीय प्रवीणा व निशा एवं तृतीय पूजा व रवीना रही। इसी कड़ी में प्रश्नोत्तरी में सिद्धी मिश्र, दड़की व प्रियंका कुमारी क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रही। प्राचार्य अर्जुनराम पूनिया ने बताया कि किसी भी देश की उन्नति में उसकी संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, परंपराओं और सहेजी गई धरोहरों का बहुत महत्त्व होता है। मगर विडंबना है कि हमारी प्राचीन लोककलाएं आज मात्र राष्ट्रीय पर्वों पर झांकी-प्रदर्शनी या विशेष सांस्कृतिक महोत्सवों में प्रदर्शित होने तक सीमित रह गई हैं परन्तु असम का सांस्कृतिक जीवन विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों एवं धार्मिक केंद्रों, जैसे सत्र एवं नमोगृह की गतिविधियों से गुंथा हुआ है। पिछले 400 सालों से असम में सत्र ही वहां की जनता के धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की देखरेख कर रहे हैं।

डॉ. उम्मेदसिंह इन्दा ने कहा कि असमी लोग हिन्दू धर्म के सभी त्योहारों को मानते हैं, लेकिन उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पर्व बिहू है, जो वर्ष में तीन बार मनाया जाता है। मूलतः ये कृषि पर्व हैं, जिन्हें लोग धर्म और जाति के भेदभाव को भूलकर हर्षोल्लास से मनाते हैं। डॉ गुलाबदास वैष्णव ने असमिया भाषा के बारे में कहते हुए बताया कि यहां कई जातीय समुदायों का घर है, मुख्य रूप से असमिया और बोड़ो भाषाएं बोल रहे हैं। बंगाली भी असम में विशेष रूप से बराक घाटी में बोली जाती है। असमिया को साहित्यिक स्वभाव मिला है। देश के इस क्षेत्र से उम्दा साहित्यिक रचनाएँ विकसित हुई हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. संजय माथुर, विजय अरोड़ा, पिंकी खोईवाल, ओम प्रकाश, छगनलाल व मदनलाल ने सहयोग प्रदान किया व सहायक आचार्य हेमलता महावर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जलते

राजस्थान पत्रिका

असमिया नृत्य व चाय बागानों की लोक कलाओं ने मन मोहा

बालोतरा, 17 फरवरी (निसं)। डीआरजे राजकीय कन्या महाविद्यालय में एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के अन्तर्गत असमिया नृत्य प्रतियोगिता व असमिया जानकारी से संबंधित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। प्रभारी डॉ. राजकुमारी ने बताया कि असमिया नृत्य, बागान में चाय, देवी पूजा व गौरी पूजा पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम प्रिंयका कुमारी, द्वितीय प्रवीणा व निशा एवं तृतीय पूजा व रवीना रही। इसी कड़ी में प्रश्नोत्तरी में सिद्धी मिश्र, दड़की व प्रियंका कुमारी क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रही। प्राचार्य अर्जुनराम पूनिया ने बताया कि किसी भी देश की उन्नति में उसकी संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, परंपराओं और सहेजी गई धरोहरों का बहुत महत्त्व होता है। मगर विडंबना है कि हमारी प्राचीन लोककलाएं आज मात्र राष्ट्रीय पर्वों पर झांकी-प्रदर्शनी या विशेष सांस्कृतिक महोत्सवों में प्रदर्शित होने तक सीमित रह गई हैं परन्तु असम का सांस्कृतिक जीवन विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों एवं धार्मिक केंद्रों, जैसे सत्र एवं नमोगृह की गतिविधियों से गुंथा हुआ है। पिछले 400 सालों से असम में सत्र ही वहाँ की जनता के धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की देखरेख कर रहे हैं। डॉ. उम्मेदसिंह इन्दा ने कहा कि असमी लोग हिन्दू धर्म के सभी त्योहारों को मानते हैं, लेकिन उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पर्व बिहू है, जो वर्ष में तीन बार मनाया जाता है। मूलतः ये कृषि पर्व हैं, जिन्हें लोग धर्म और जाति के भेदभाव को भूलकर हर्षोल्लास से मनाते हैं। डॉ. गुलाबदास वैष्णव ने असमिया भाषा के बारे में कहते हुए बताया कि यहां कई जातीय समुदायों का घर है, मुख्य रूप से असमिया और बोड़ो भाषाएं बोल रहे हैं। बंगाली भी असम में विशेष रूप से बराक घाटी में बोली जाती है। असमिया को साहित्यिक स्वभाव मिला

असमिया नृत्य प्रतियोगिता व प्रश्नोत्तरी

बालोतरा @ पत्रिका. स्थानीय डीआरजे राजकीय कन्या महाविद्यालय में एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के तहत असमिया नृत्य प्रतियोगिता व असमिया जानकारी से संबंधित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। प्रभारी डॉ. राजकुमारी ने बताया कि असमिया नृत्य, बागान में चाय, देवी पूजा व गौरी पूजा पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम प्रियंका कुमारी, द्वितीय प्रवीणा व निशा एवं तृतीय पूजा व रवीना रही। इसी कड़ी में प्रश्नोत्तरी में सिद्धि मिश्र, दड़की व प्रियंका कुमारी प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रही। डॉ. संजय माथुर, विजय अरोड़ा, पिंकी खोईवाल, ओम प्रकाश, छगनलाल व मदनलाल मौजूद थे। सहायक आचार्य हेमलता महावर ने आभार जताया।

प्राचार्य अर्जुनराम पूनिया ने बताया कि किसी भी देश की उन्नति में उसकी संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, परंपराओं, सहेजी गई धरोहरों का खास महत्व होता है। मगर विडंबना है कि हमारी लोककलाएं आज मात्र राष्ट्रीय पर्वों, झांकी-प्रदर्शनी, विशेष सांस्कृतिक महोत्सवों में प्रदर्शित होने तक सीमित रह गई हैं। डॉ. उम्मेदसिंह इन्दा ने कहा कि असमी लोग हिन्दू धर्म के सभी त्योहारों को मानते हैं, लेकिन उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पर्व बिहू है, जो वर्ष में तीन बार मनाया जाता है। मूलतः ये कृषि पर्व है। डॉ. गुलाबदास वैष्णव ने बताया कि असम कई जातीय समुदायों का घर है, मुख्य रूप से असमिया, बोड़ो भाषाएं बोलते है। प्रभारी डॉ. राजकुमारी ने बताया कि छात्राओं ने असमिया नृत्य बागान में चाय, देवी पूजा व गौरी पूजा पर आधारित नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। इसमें प्रथम प्रियंका कुमारी, द्वितीय प्रवीणा व निशा एवं तृतीय पूजा व रवीना रही। प्रश्नोत्तरी में सिद्धि मिश्र, दड़की व प्रियंका कुमारी प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रही।